Dainik Bhaskar (Indore), 04th August 2026, Page – 06

INNOVATION

307 पेटेंट में से 151 मंजूर, लैब से निकलकर आम जिंदगी तक पहुंच रही तकनीकें

आईआईटी इंदौर की 8 तकनीकों को मिला लाइसेंस, 20 को स्टार्टअप ने अपना लिया

सिटी रिपोर्टर • इंदौर

आईआईटी इंदौर की रिसर्च अब केवल लैब और पेटेंट तक सीमित नहीं रह गई है। संस्थान में विकसित तकनीकें अब उद्योगों और स्टार्टअप के जरिए बाजार तक पहुंचने लगी हैं। संस्थान के ताजा रिसर्च एवं डेवलपमेंट (आरएंडडी) आंकड़ों के मुताबिक अब तक 307 पेटेंट दाखिल किए गए हैं, जिनमें से 151 को मंजूरी मिल चुकी है। इनमें 8 तकनीकों का लाइसेंस उद्योगों को दिया जा चुका है, जबकि 20 को स्टार्टअप अपना चुके हैं। इससे स्पष्ट है कि आईआईटी इंदौर की रिसर्च अब लोगों के काम आने वाले उत्पाद और समाधान बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रही है।

संस्थान के शोधकर्ताओं के नाम अब तक 11,199 रिसर्च पेपर प्रकाशित हो चुके हैं और फिलहाल 927 शोध परियोजनाओं पर काम चल रहा है। आईआईटी का फोकस अब केवल नई तकनीक विकसित करने पर नहीं, बल्कि उन्हें उद्योगों तक पहुंचाकर व्यावसायिक उपयोग में लाने पर भी है।

आमजन के लिए क्यों महत्वपूर्ण हैं ये तकनीक

- **ड्रोन आधारित क्रैक डिटेक्शन सिस्टम :** पुलों और इमारतों में दरारों की तेजी से पहचान करेगा, जिससे हादसों का खतरा कम होगा।
- **माइक्रो-3डी प्रिंटिंग :** बेहद छोटे और सटीक उपकरण बनाने में उपयोगी, जिसका इस्तेमाल मेडिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स और रक्षा से जुड़े क्षेत्र में हो सकता है।
- **एल-एस्पेरेजिनेज तकनीक :** रक्त कैंसर (एक्यूट लिम्फोब्लास्टिक ल्यूकेमिया) के इलाज में उपयोग होने वाले एंजाइम को बेहतर बनाने पर आधारित है आईआईटी में हुई यह रिसर्च।

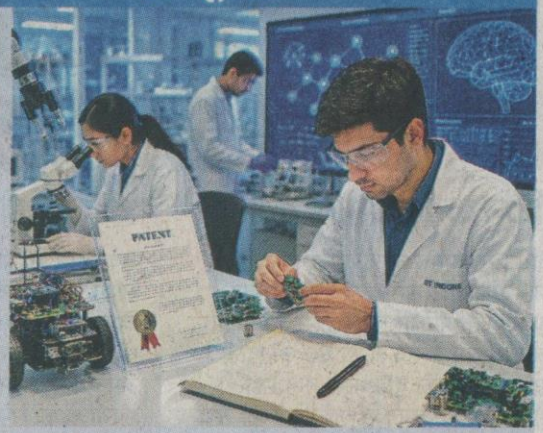

- **बायोडिग्रेडेबल नैनोपार्टिकल्स :** जैव-अनुकूल चिकित्सा तकनीकों के विकास में मददगार साबित होगा।
- **एमॉर्फस मेटल ऑक्साइड फिल्म :** इलेक्ट्रॉनिक्स और ऊर्जा उपकरणों की दक्षता बढ़ाने वाली विशेष तकनीक है।
- **शौर्य' यूनिट :** यह एक अंतरिक्ष यान के हार्डवेयर के संचालन और परीक्षण के लिए विकसित प्रणाली। इसके अलावा अन्य तकनीक भी हैं

सेहत, अंतरिक्ष और निर्माण में मददगार

आईआईटी इंदौर की दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन लैब में विकसित तकनीकों को उद्योगों तक पहुंचाने का काम कर रही है। इसी कड़ी में कुछ तकनीकों के व्यावसायीकरण के लिए कंपनियों के साथ समझौते भी हुए हैं। संस्थान का लक्ष्य पेटेंट तक सीमित रहने के बजाय तकनीकों का टेक्नोलॉजी ट्रांसफर, स्टार्टअप सहयोग और कमर्शियलाइजेशन बढ़ाना है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि यही रफ्तार बनी रही तो आईआईटी इंदौर की कई तकनीकें आने वाले वर्षों में स्वास्थ्य, निर्माण, अंतरिक्ष, इलेक्ट्रॉनिक्स और मैन्युफैक्चरिंग जैसे क्षेत्रों में सीधे लोगों की जिंदगी को आसान बनाने में अहम होंगी।